ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 4 अप्रैल-मई 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

माला में 108 दाने ही क्यों?	डा. महेश पारासर	2
रामायण की चौपाई से करें मनोकामना की पूर्ति	डा. रचना भारद्वाज	4
बहुत संतुलन बनाकर रखते हैं तुला लग्न वाले	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
दुर्गा सप्तशती पाठ अधूरा है बिना सिद्व कुंजिका स्त्रोत पढ़ें	श्रीमती कविता अगरवाल	6
अक्षय तृतीया व्रत	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
वृक्ष और वास्तु	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	8
कैसा फल देता है अस्त ग्रह	पं. अजय दत्ता	9
महर्षि वेदव्यास	कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा	10
दक्षिण दिशा–कुछ भ्रांतियां	मोनिका गुप्ता	11
अनुशासित जीवन शैली सुवासित जीवन धारा	सुरेश अग्रवाल	12
नवरात्रि महोत्सव	श्रीमती रेनू कपूर	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
शयन विधि (शयन हेतु आवश्यक जानकारी)	पं. विष्णु पाराशर	16
दुष्परिणाम	विजय शर्मा	17
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

माला में 108 दाने ही क्यों?

प्राचीन काल से ही जप करना भारतीय पूजा उपासना पद्धति का एक अभिन्न अंग रहा है। जप के लिए माला की जरूरत होती है, जो रूद्राक्ष, तुलसी, वैजयंती, स्फटिक, मोतियों या नगों से बनी हो सकती है। इनमें से रूद्राक्ष की माला को जप के लिए सर्वक्षेष्ठ माना गया है, क्योंकि इसमें कीटाणुनाशक शक्ति के अलावा विद्युतीय और चुंबकीय शक्ति भी पाई जाती है।

अंगिरास्मृति में माला का महत्व इस प्रकार बताया गया है।

विना दर्भैश्चयत्कृत्यं सच्चदानं विनोदकम्।
असंख्यता तु यजप्तं तत्सर्व निष्फल भवेत्।।

अर्थात बिना कुश के अनुष्ठान, बिना जल संस्पर्श के दान तथा बिना माला के संख्याहीन जप निष्फल होता है। माला में 108 ही दाने क्यों होते है, उस विषय में योगचूड़ामणि उपनिषद् में कहा गया है।

षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्त्राण्येकं विंशति। एतत् संख्यान्तिंत मन्त्र जीवो जपति सर्वदा।।

हमारी सांसों की संख्या के आधार पर 108 दानों की माला स्वीकृति की गई है 24 घंटो में एक व्यक्ति 21,600 बार सांस लेता है। चूंकि 12 घंटे दिनचर्या में निकल जाते है। तो शेष 12 घंटे देव आराधना के लिए बचते हैं। अर्थात् 10,800 सांसों का उपयोग अपने इष्टदेव को स्मरण करने में व्यतीत करना चाहिए, लेकिन इतना समय देना हर किसी के लिए संभव नही होता। इसलिए। इस संख्या में से अंतिम दो शून्य हटाकर शेष 108 सासं मे ही प्रभुस्मरण की मान्यता प्रदान की गई।

दूसरी मान्यता भारतीय ऋषियां की कुल 27 नक्षत्रों की खोज पर आधारित है। चूंकि प्रत्येक नक्षत्र के 4 चरण होते है। अतः इनके गुणनफल की संख्या 108 आती है, जो परम पवित्र मानी जाती है। इसमें श्री लगाकर 'श्री 108' हिंदधर्म में धर्माचार्य, जगद्गुरूओं के नाम के आगे लगाना अति सम्मान प्रदान करने का सूचक माना जाता है।

माला के 108 दानो से यह पता चल जाता है कि जप कितनी संख्या में हुआ। दूसरे माला के ऊपरी भाग में एक बड़ा दाना होता है। जिसे सुमेरू कहते हैं। इसका विशेष महत्व माना जाता है। चूंकि माला की गिनती सुमेरू से शुरू कर माला समाप्ति पर इसे उलटकर फिर शुरू से 108 का चक्र प्रारंभ किया जाने का विधान बनाया गया है। इसलिए सुमेरू को लांघा नही जाता। एक बार माला जब पूर्ण हो जाती है, तो अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए सुमेरू को मस्तक से स्पर्श किया जाता है। ऐसा माना जाता है। कि ब्रहाांड में सुमेरू की स्थिति सर्वोच्च होती है।माला में दानों की सख्यां के महत्व पर शिवपुराण में कहा गया है।

अष्टोत्तरशतं माला तत्र स्यादुत्तमोत्तमम्। शतसंख्योत्तमा माला पच्चाशत् मध्यमा।।

अर्थात् एक सौ आठ दानों की माला सर्वश्रेष्ठ, सौ–सौ की श्रेष्ठ तथा पचास दानों की मध्यम होती है। शिवपुराण में ही इसके पूर्ण श्लोक 28 में माला जप करने के संबधं में बताया गया है। कि अंगूठे से जप करें तो मोक्ष, तर्जनी से शत्रुनाश, मध्यमा से धन प्राप्ति और अनामिका से शांति मिलती है।तीसरी मान्यता ज्योतिषशास्त्र के अनुसार समस्त ब्रहाांड को 12 भागों में बाँटने पर आधारित है। इन 12 भागों को राशि की संज्ञा दी गई है। हमारे शास्त्रों में प्रमुख रूप से नौ ग्रह माने जाते है। इस तरह 12 राशियों और नो ग्रहों का गुणनफल 108 आता है। यह संख्या संपूर्ण विश्व का प्रतिनिधीत्व करने वाली सिद्ध हुई है।चौथी मान्यता सूर्य पर आधारित है। एक वर्ष में सूर्य 216000 कलाएं बदलता है। चूंकि सूर्य हर 6 महीने में उत्तरायण और दक्षिणायन रहता है, तो इस प्रकार 6 महीने में सूर्य की कुल कलाएं 108000 होती है। अंतिम तीन शून्य हटाने पर 108 अंको की संख्या मिलती है। इसलिए मालाजप में 108 दाने सूर्य की एक एक कलाओं के प्रतीक हैं।

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

अमृत वचन

बड़ो की आड़ लेने वाला बौना होकर रह जाता है।

सुकरात ने कहा- "बेवकूफी से चिन्ता रहित होने की अपेक्षा रहता हुआ सुकरात श्रेष्ठ है।"

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेदय पारासर जी,

मैं आपकी पत्रिका का कई सालों से स्वाध्याय कर ज्ञान अर्जित कर रहा हूँ। आपकी पत्रिका केवल उन्हीं को प्राप्त होती है जो इसके मैंम्बर बरने हैं मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि कुछ ऐसा करें कि पत्रिका सभी बुक सेलरो पर मिल सके। जिससे काफी लोगों का भला होगा।

सधन्यवाद

डा. के. डी. शर्मा, आगरा।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का फरवरी–मार्च अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका बहुत ही रुचिकर और सार गर्भित लगी। सम्पादकीय बहुत ही अच्छा लगा। सभी लेख अच्छे व ज्ञान वर्द्धक करने वाले थे आपको सादर प्रणाम।

रामिकिशन वर्मा, अलीगढ़।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न1. क्या मेरी सरकारी नौकरी लगेगी? मेरा भाग्योदय कब होगा? **योगेन्द्र सिंह, ग्वालियर।**

उत्तर–आपकी कुण्डली के अनुसार आपको सरकारी नौकरी मिलने के योग नहीं है आप बैकिंग सैक्टर में प्रयास करें। एक पन्ना रत्न व लहसुनिया तुरन्त धारण करें। जून 2014 तक आप नौकरी अवश्य प्राप्त करेगे।

प्रश्न2. मेरा वैवाहिक जीवन नरक तुल्य है। कुण्डली देखकर उचित मार्गदर्शन करें। **राधिका शर्मा, दिल्ली।**

उत्तर–सप्तमेश नीच का होकर अस्त है। सप्तम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि भी है। राहु–केतु की शान्ति करवायें। शनि की पूजा करें। मंगल त्रिकोण यंत्र व कात्यायनी यंत्र की पूजा करें। मोती व पुखराज रत्न धारण करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. अपने मकान का नक्शा भेज रहा हूँ घर में सभी मानसिक तनाव में रहते है। उपाय बतायें।

राजेश शर्मा, आगरा।

समस्या– आपके घर में उत्तर–पूर्व दिशा में शौचालय बना हुआ हैं। जिसकी बजह से मानसिक तनाव लम्बी गम्भीर बीमारी व व्यय की स्थिति बनी रहेगी। इसे वहाँ से हटा कर पश्चिम या पश्चिम मध्य में ले जाये। तुरन्त आराम मिलेाग।

समस्या– 2. मेरा पत्नी से वैचारिक मतभेद रहता है व हम दोनों ही तनाव गस्त रहते है। मार्ग दर्शन करें। घर का नक्शा संलग्न है। प्रभात वर्मा, दिल्ली।

समस्या– आपके घर में उत्तर मध्य में रसोई घर स्थित है। जो आप दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद पैदा कर रहा है। खाना वैचारिक मतभेद पैदा कर रहा है। खाना बनाते समय मुँह पश्चिम दिशा की ओर होता है। आग और पानी पास–पास है। जिस वजह से वैचारिक मतभेद व तनाव बना रहता है। रसोई को पूर्व–दक्षिण या दक्षिण मध्य में स्थानान्तरित करे। अवश्य ही आराम मिलेगा। खाना बनाते समय मुँह की ओर रखे।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

रामायण की चौपाई से करें मनोकामना की पूर्ति

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

तुलसीदास जी मंत्रसृष्टा थे रामचरिच मानस की हर चौपाई मंत्र की तरह सिद्ध है। रामायण कामधेनु की तरह मनोवांछित फल देती है।

रामचरित मानस में कुछ चौपाइयां ऐसी है जिनका विपत्तियों तथा संकट से बचाव और ऋद्धि–सिद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति के लिए मंत्रोच्चारण के साथ पाठ किया जाता है। इन चौपाइयों को मंत्र की तरह विधि विधान पूर्वक एक सौा आठ बार हवन की सामग्री से सिद्ध किया जाता है। हवन चंदन के बुरादे, जौ, चावल, शुद्ध केसर, शुद्ध घी, तिल, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, नागर मोथ, पंचमेवा आदि के साथ निष्ठापूर्वक मंत्रोच्चार के समय काशी बनारस का ध्यान करें।

किस कामना की पूर्ति के लिए किस चौपाई का जप करना चाहिए इसका एक संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

ऋद्धि सिद्ध की प्राप्ति के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएं। होहि सिद्धि अनिमादिक पाएं।

धन संपत्ति की प्राप्ति हेतु

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपत्ति नानाविधि पावहिं।

लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए

जिमि सरिता सागर मंहु जाही। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपत्ति बिनहि बोलाएं। धर्मशील पहिं जहि सुभाएं।।

वर्षा की कामना की पूर्ति हेतु

सोई जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवनदाता।

सुख प्राप्ति के लिए

सुनहि विमुक्त बिरत अरु विबई लहहि भगति गति संपत्ति नई।।

शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिए

तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।

विद्या प्राप्ति के लिए

गुरु ग्रह गए पढन रघुराई। अलपकाल विद्या सब आई।।

ज्ञान प्राप्ति के लिए

छिति जल पावक गगन समीरा। पंचरचित अति अधम शरीरा।।

प्रेम वृद्धि के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती।।

परीक्षा में सफलता के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनुजानी। कवि उर
अजिर नचावहिं बानी।।
मोरि सुधारहिं सो सब भांती। जासु कृपा
नहिं कृपा अघाती।।

विपत्ति में सफलता के लिए

राजिव नयन धरैधनु सायक। भगत विपत्ति भंजनु सुखदायक।।

संकट से रक्षा के लिए

जौं प्रभु दीन दयाल कहावा। आरतिहरन बेद जसु गावा।।
जपहि नामु जन आरत भारी। मिटहि कुसंकट होहि सुखारी।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

विघ्न विनाश के लिए

सकल विघ्न व्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपा बिलोकहिं जेही।।

दरिद्रता दूर करने हेतु

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद धन दारिद्र दवारिके।।

अकाल मृत्यु से रक्षा हेतु

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित प्रदान केहि बात।।

विविध रोगों, उपद्रवों आदि से रक्षा हेतु

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम काज नहिं काहुहिं व्यापा।।

विष नाश के लिए

नाम प्रभाऊ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।

खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति हेतु

गई बहारे गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।।

महामारी, हैजा आदि से रक्षा हेतु

जय रघुवंश वन भानू। गहन दनुज कुल दहन कूसानू।।

मस्तिष्क पीड़ा से रक्षा हेतु

हनुमान अंगद रन गाजे। होक सुनत रजनीचर भाजे।।

शत्रु को मित्र बनाने के लिए

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाइ।।

शत्रुता दूर करने के लिए

वयरु न कर काहू सन कोई। रामप्रताप विषमाता खोई।।

भूत प्रेत के मथ से मुक्ति के लिए

प्रबनउ पवन कुमार खल बन पावक ग्यान धुन।
जासु हृदय आगार बसहि राम सर चाप धर।।

शेष पेज 18 पर.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM

भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. **09717195756**

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

बहुत संतुलन बनाकर रखते हैं तुला लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

तुला लग्न चित्रा के दो चरण, स्वाति के चार चरण और विशाखा के तीन चरण से मिलकर बना है। यह एक चर राशि है, जिसके कारण तुला जातक सैर सपाटे के शौकीन होते हैं। तुला का स्वामी शुक्र होता है। तुला और वृष के एक ही स्वामी होने के कारण इन लोगों का आपसी तालमेल अच्छा होता है। काल पुरुष की कुंडली में तुला सप्तम भाव में पड़ती है और यह भाव मित्र, पार्टनर पत्नी और बाँस के साथ तारवभ्य बनाता है।

यह वायु तत्व की राशि है और स्वभावतः क्रूर होता है इसका प्रतिनिधित्व पश्चिम दिशा की ओर होता है। तुला का उदय सिर से होता है इसलिए इसे शीर्षोदय कहते हैं। तुला वाला व्यक्ति नपी तुली बात करता है। उसे डीगें मारना पंसद नहीं होता। इस लग्न का जातक शब्दों के प्राण समझने वाला होता है। यह बातों से मारना अधिक पसंद करता है। इस लग्न के जातक संगीत व भाषण गंभीरता से सुनते है। इस लग्न का चिन्ह तराजू है। तराजू का अर्थ है संतुलन। इस लग्न का जातक अन्दर से न्यायधीश होता है। तुला लग्न में शनि उच्च का होता है और सूर्य नीच का हो जाता है। इस लग्न वालों के लिए शनि अति शुभ फल देने वाला तथा परम योग कारक ग्रह है। इस लग्न का नियंत्रण कमर और गुर्दे के आसपास होता है। इस लग्न में जन्में जातक आदर्शवादी होते है। यदि शनि अच्छा हो तो इस लग्न का जातक बहुत समझदार होता है। तुला लग्न वाले अपनी बात को बहुत बजन देकर कहते है। निराशा की इनकी जिंदगी में कोई जगह नहीं होती। ऐसे जातकों की प्रकृति उदार होती है। इस लग्न के जातकों का धन व्यय के मामलें में संतुलन कुछ बिगड़ जाता है। ये मिलनसार हंसमुख और अंतःकरण से शुद्ध होते है। इनका जनसंपर्क भी अच्छा होता है।

तुला लग्न के जातकों की हर तरह के लोगों से मित्रता होती है। इनकी बुद्धि प्रखर होती है। संतोषी होते हैं। जिससे इनमें आलस्य भी आ जाता है। इन्हें कर्मठ मित्र और सहयोगी मिलते हैं। ये अपने सेवको से बहुत प्रसन्न रहते हैं। मौका पड़ने पर अपने सेवको के लिए अपने आदर्शो को भी ताक पर रख सकते हैं।

तुला लग्न का जातक अपने को दूसरों से अलग दर्शाने का प्रयास करता है। दूसरों से प्रेम करना विशेष गुण है। ये पुरानी परंमपरा से हटकर नई गढना ज्यादा पसंद करते हैं। लग्नेश शुक्र यदि इनकी कुंडली में बलवान हो तो ये आर्कषक भी होते हैं, ये पूर्णतया प्रेममय रहते हैं। इन्हें शोरगुल कम पंसद होता है। ऐसे जातकों की पत्नी यदि उम्र में बड़ी हो तो तुला जातक अति भाग्यशाली होते है। समाज में पूज्य लोग इनके अच्छे मित्र होते हैं। इनमें न्यायधीश संगीतकार, प्रशासनिक, अधिकारी, राजनीतिज्ञ और धर्माचार्य होने के गुण होते हैं। इन जातकों का शरीर कफ प्रधान होता है। बदलते मौसम, ठंड और खट्टे से ये ज्यादा प्रभावित होते है। इनका सीना चौड़ा होता है। तुला लग्न वालों में गर्दन से लेकर सिर तक कहीं तिल अवश्य होता है। अगर ये राजनीति या धार्मिक प्रतिष्ठान के मुखिया हो तो काफी सम्मान और अधिकार प्राप्त करते हैं। दूसरों को बिना वोले ही ये प्रभावित कर लेते हैं। दूसरों की मदद में भी इन्हें काफी आनन्द आता है। तुला जातक वाले को कर्ज लेना अच्छा नहीं लगता और अगर ये कर्ज लेता भी है तो जब तक कर्ज सिर से उतर नहीं जाता वह उसी के बारे में सोचता रहता है। ये लोग कठिन कार्य को भी सरलता से करने में माहिर होते हैं। इस लग्ल वाले के शुभ रत्न हीरा है। इन्हें हीरा आजीवन धारण करना चाहिए ऐसा करने से इन्हें आत्मबल मिलता है और शरीर की प्रतिरोधक

शेष पेज 19 **पर**.....

500/- **1100/-**
परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

दुर्गा सप्तशती पाठ अधूरा है बिना सिद्ध कुंजिका स्त्रोत पढ़ें

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

भगवति–शक्ति की देवी माँ दुर्गा के नौ रुपों की साधना के लिये नवरात्रा से बढ़कर कोई अन्य श्रेष्ठतम पर्व नही हो सकता। इस वर्ष नवरात्रि का सुखद योग 11 अप्रेल, गुरुवार संवत्सर 2070, चैत्र शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ हो रहा है।

आदि शक्ति माँ दुर्गा, विद्यादायिनी माँ सरस्वती और धन–संपदा दात्रि महालक्ष्मी, मुख्यत' इन तीनों देवियों का परिचय बाल्यवस्था मे ही अपने घर में होने वाले छोटे–बड़े त्यौंहारों से हो जाता है। साधारण रुप से घर–परिवारों में सरस्वती पूजन, लक्ष्मी पूजन अलग–अलग समय पर स्वतन्त्र रुप से होता है किंतु नवरात्र में तीनों देवियों का उत्सव एक साथ मनाया जाता है। पहले तीन दिन काली या दुर्गा के, दूसरे तीन दिन सरस्वती के और तीसरे तीन दिन महालक्ष्मी के माने जाते है। नवरात्र में साधक पूजा–विधि करने के उपरांत नौं दिन तक दुर्गा सप्तशती का पाठ स्वंय करते है या करवाते हैं। दुर्गा सप्तशती का पाठ करने के उपरांत अन्त में जब तक कुंजिका स्त्रोत का पाठ नहीं किया जाए तक तक पाठ का फल प्राप्त नहीं होता, चाहे किसी मंत्र का जाप किया हो या हवन किया हो उन सब का फल शून्यवत हो जाता हैं। इसीलिये कुंजिका स्त्रोत में अन्त में कहा है– **"न तस्य जायते सिद्धि अरिण्य रोदनम यथा।"** जिस प्रकार जंगल में जाकर जोर–जोर से रोने पर भी कोई चुप कराने वाला नहीं होता है उसी प्रकार से बिना कुंजिका स्त्रोत के पाठ करने पर उसका किसी भी प्रकार का फल प्राप्त नहीं होता है। चाहे व्यक्ति कवच, अर्गला स्त्रोत, कीलक, रहस्य सुक्त जप, ध्यान, न्यास आदि न कर सके तो भी केवल कुंजिका स्त्रोत का पाठ मात्र करने से उसे पूर्ण दुर्गा पाठ का फल प्राप्त होता है। यहाँ पाठको की सुविधा के लिये सम्पूर्ण कुंजिका स्त्रोत का पाठ दिया जा रहा है।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मंत्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।।1।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्त नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्।।2।।
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।।3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।।4।।

अथ मंत्रः

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।। ऊँ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः।
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल।
ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं
लं क्षं फट् स्वाहा ।।1।।
नमस्ते रुद्ररुपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ।।2।।
नमस्ते शुभहन्त्रयै च निशुम्भासुरघातिनि।।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व में ।।3।।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै हींकारी प्रतिपालिका।।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तुते।।4।।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररुपिणि ।।5।।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वी वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्री क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं में शुभं कुरु ।।6।।
हुं हु हुं हुंकाररुपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्री भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ।।7।।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।।8।।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुस्व में ।।9।।
इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ।।10।।
यस्तु कुंजिकया देवि हीना सप्तशती पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ।।11।।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
।कुंजिकास्तोत्रं सम्पूर्णम।
।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

अक्षय तृतीया व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया कहते हैं। यह सन्तान धर्मवलंबियों का प्रधान त्यौहार है। इस दिन किये हुए दान और स्नान, जप, होम आदि सभी कर्मों का फल अनंत होता है। सभी अक्षय हो जाते हैं। सभी अक्षय हो जाते हैं। इसी से इसका नाम अक्षया पड़ा है।

इस तिथि को नर–नारायण, परशुराम और हयग्रीव अवतार हुए थे। इसीलिए इस दिन उनकी जयंती मनायी जाती हैं तथा इसी दिन त्रेता युग भी आरंभ हुआ था। अतः इसे मध्याहव्यापिनी ग्रहण करना चाहिए। परंतु परशुराम जी प्रदोष काल में प्रकट हुए थे, इसलिए द्वितीया को मध्याह से पहले तृतीया आ जाए, तो उस दिन अक्षय तृतीया, नर–नारायण जंयती, परशुराम जंयती और हयग्रीव जंयतीसब संपन्न की जा सकती है। और यदि द्वितीया अधिक हो, तो परशुराम जंयती दूसरे दिन होती है। यदि इस दिन गौरी व्रत भी हो, तो 'गौरी विनायकोपेता' के अनुसार गौरी पुत्र गणेश की तिथि चतुर्थी का सहयोग अधिक शुभ होता है। अक्षय तृतीया बड़ी पवित्र और महान् फल देने वाली है। इसलिए इस दिन सफलता की आशा से व्रतोत्सवादि के अतिरिक्त वस्त्र, शस्त्र और आभूषणादि बनवाये अथवा धारण किये जाते है। नवीन स्थान, संस्था एवं समाज आदि का स्थापन या उद्घाटन भी किया जाता है।ज्योतिषी बंधु आगामी वर्ष की तेजी–मंदी जानने के लिए इस दिन अन्न, वस्त्र आदि व्यावहारिक वस्तुओं और व्यक्ति विशेष के नामों को तौल कर एक सुपूजित स्थान में रखते हैं और दूसरे दिन फिर तौल कर उनकी न्यूनधिकता से भविष्य का शुभाशुभ फल मालूम करते है। अक्षय तृतीया तिथि, सोमवार, रोहिणी नक्षत्र ये तीनों हों, तो बहुत श्रेष्ठ माना जाता है। किसान भाई उस दिन चंद्रमा के अस्त होते समय रोहिणी का आगे जाना अच्छा और पीछे रह जाना बुरा मानते है। इस दिन स्वर्गीय आत्माओं की प्रसन्नता के लिए जल, कलश, पंखा, खड़ाऊँ, छाता, सत्तू, ककड़ी, खरबूजा आदि फल, शक्कर तथा सुवर्ण, मिष्ठान, घृतादि पदार्थ ब्राहाण को दान करने चाहिए। इसी दिन चारों धामों में उल्लेखनीय बद्री नारायण के दारवाजे खुलते है। इस दिन भक्तजनों को श्री बद्री नारायण जी का चित्र सिंहासन पर विराजमान कर मिश्री तथा भीगी चने की दाल से भोग लगाना चाहिए। इस दिन गंगा स्नान तथा भगवान कृष्ण को चंदन लगाने का विशेष माहात्म्य है। इस दिन तीनों जयन्तियाँ एक साथ होने से व्रती को चाहिए कि वह प्रातः स्नानादि से निवृत होकर, तिथि, नक्षत्र, करण, योग एंव नाम, गोत्र वंशादि का उच्चारण करते हुए, सकंल्प सहित, भगवान का यथाविधि षोडशोपचार पूजन करे। उन्हे पंचामृत से स्नान करावे, सुगंधित पुष्प माला पहनावे और नैवेद्य में नर–नारायण के निमित्त सकें हुए गेहूँ, या जौ का सत्तू, परशुराम के निमित्त कोमल ककड़ी और हयग्रीव के निमित्त भीगी हुई चने की दाल अर्पण करें। हो सके तो भक्त जन उपवास तथा समुद्र स्नान करें तथा दिव्य कथा पढ़े या श्रवण करें।

कथाः– एक बार महाराज युधिष्ठिर को अक्षय तृतीया के बारे में जानने की उत्कृष्ट अभिलाषा हुई तब उन्होने सिंहासनारूढ़ देवकीनंदन पुराण पुरूषोतम भगवान श्री माधव के चरणों में मस्तक झुका कर प्रणाम कर भगवान श्री कृष्ण से इसके बारे में पूछा। तब लीलाधारी नंद नंदन ने कहा कि हे राजन। धार्मिक दृष्टि से यह तिथि अत्यंत ही पुण्यदायिनी है। इसके संबंध में एक दिव्य कथा है।हे नरशार्दूल युधिष्ठिर! प्राचीन काल में 'महादेय' नामक बहुत ही निर्धन, आस्तिक तथा गौ, ब्राहण पूजक एक वैश्य था। उसने किसी ब्राहाण के द्वारा इसका माहात्म्य श्रवण किया। तब उसी दिन गंगा स्नान और पितृ तर्पण श्राद्धादि कर, सुंदर पात्रों में सत्तू, अन्न, नमक, चावल, गुड़, स्वर्ण, वस्त्र, छाता आदि दान करने से उसका पुण्य शाश्वत हो गया। आगे चल कर वही वैश्य कुशवती नामक नगरी का राजा हुआ। अपनी इस अक्षय संपत्ति को देख कर राजा को महान् आश्चर्य हुआ तब राजा ने ब्राहाणों से इसका कारण पूछा। राज पंड़ितो ने जब अक्षय तृतीया का माहात्म्य बताना प्रारंभ किया, तभी उसे अपने पूर्व सुकृत की स्मृति हो आयी। उसी दिन से इसका नाम अक्षय तृतीया है। यह मनुष्य को संकटों और गरीबी से उबारने वाली तथा दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से शांति दिलाने वाली तिथि है, अतः इस तिथि में दान–पुण्यादि व्रतों का अवश्य ही पालन करना श्रेयष्कर है। ❋❋❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

शेष पेज 22 पर.....

वृक्ष और वास्तु

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

पुराण कहते हैं कि निसंतान व्यक्ति यदि आम के वृक्षों का बाग लगवाए तो उसे श्रेष्ठ संतान मिलती है। जो व्यक्ति मार्ग के दोनों ओर सुंदर छायादार वृक्ष लगवाते हैं वह स्वर्ग में निवास करते है।

वृक्ष कैसे लगाने चाहिए? किस मुहूर्त में लगाने चाहिए? कौन–सा वृक्ष घर के बाहर लगाए और कौन–सा घर के भीतर व कौन अशुभ है और कैसे शुभ? किन वृक्षों की लकड़ी घर में लगाने योग्य है? किस देवता पर कौन सा पुष्प चढाया जाय? किस ग्रह के हवन में किस लकड़ी का प्रयोग किया जाय? कौन–सा वृक्ष समृद्धकारी है तो कौन सा वृक्ष कलह कारी और कौन सा मृत्युकारी है। वृक्षारोपण के लौकिक और पर लौकिक फल क्या हैं? इस सारी बातों का विस्तृत वर्णन वास्तुग्रंथो में मिलता है। तो चाहिए आज हम लोग इन्हीं बातों पर चर्चा करेंगे।

प्राचीन वास्तुग्रंथो में भवन निर्माण के साथ–साथ यह भी वर्णन मिलता है कि भवन में कौन सी लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए और किन वृक्षों की लकड़ी प्रयोग करने से हानि या लाभ होता है। यद्यपि नगरों में आज कल लोहा, प्लाई, सनमाइका आदि का प्रयोग अधिक होने लगा हैं। वास्तु सिंद्धातों के अनुरुप काष्ठ का प्रयोग लोगों को असुविधाजनक लगने लगा है। किंतु फिर भी यथासंभव इसका लाभ उठाया जा सकता है। ग्रंथों में यह भी दिया गया है कि घर की किस दिशा में कौन सा वृक्ष लगा कर हम उनसे समृद्धि, संमपन्नता, आरोग्य व आयु का लाभ पा सकते है।

शुभ–अशुभ वृक्ष –: बबूल, खैर व बेर आदि कॉंटेदार वृक्ष घर के समीप रहने से शत्रु भय रहता है। अतः इन बृक्षों से बचना चाहिए। चंपा, गुलाब, जाती, केवड़ा, मनीप्लांट शुभ होते है। अंगूर की बेल का मंडप, चंदन, अनार का वृक्ष भी घर में शुभ परिणाम देते हैं।

ग्रंथो के अनुसार घर के उत्तर में कैथ पूर्व में बरगद, दक्षिण में गुलाब पश्चिम में घर के बाहर पीपल का वृक्ष शुभ होता है। पाकड़ का वृक्ष दक्षिण में बरगद का वृक्ष पश्चिम में गूलर का वृक्ष उत्तर में और पीपल का पूर्व में अत्यधिक अशुभ माना जाता है। दूध वाले वृक्ष (पीपल,बरगद) लाल फूल वाले वृक्ष, कांटेदार वृक्ष पाकड़, सेमर और गूलर अग्नि कोण में अत्यन्त अशुभ परिणाम देते हैं। यह मृत्युकारक भी हो सकते हैं।

केला रहे अकेला–

खजूरी, दाडिमी, केला, बदरी, बेर, नीबूं जिस घर में रहेगें वहाँ कलह अवश्य करायेगें। केले के बारे में एक लोकोत्ति प्रचलित है कि केला रहे अकेला। पुराण कहते हैं कि यदि निसंतान व्यक्ति यदि आम के वृक्षों का बाग लगवाये तो उसे श्रेष्ठ संतान मिलती है। जो व्यक्ति मार्ग के दोनों सुंदर छायादार वृक्ष लगवाते है वह स्वर्ग में निवास करते हैं।

आपदा पीड़ित वृक्ष घातक–

जिस वृक्ष पर बिजली गिरी हो उसकी लकड़ी घर नहीं लानी चाहिए। यदि इसको घर में ले आए तो भयानक दुर्घटना होगी। इस वृक्ष की लकड़ी से बने पलंग या चारपाई मृत्युकाल मानी गई है। आँधी गिरे वृक्ष की लकड़ी के प्रयोग से बात रोग होता है। मार्ग के वृक्ष से कुल की हानि होती है तथा कुल के वृक्ष कटवाने से मृत्यु देवताओं के वृक्षों अर्थात मंदिरों आश्रमों के वृक्ष कटवाने से धन नाश बताया गया है। इसके अलावा जिस वृक्ष पर अधिक कौवे बैठते हो वह भी धन नाश करता है। शमशान के किसी भी वृक्ष की लकड़ी कभी भी प्रयोग में नहीं लानी चाहिए। इसे मृत्यु देने वाला कहा जाता।

सूर्य का प्रकाश रुकना गलत–: यदि आपके आवास से चारो ओर वृक्ष लगे हो तो यह भी ठीक नहीं है। वृक्ष यदि दो घंटो से अधिक सूर्य के प्रकाश को रोके तो वह वास्तुनियम के प्रतिकूल प्रभाव दे रहे है। वृक्ष काटने से पहले हम प्रकृति से जो छीन रहे है उसे पूरा कर देना चाहिए। जो लोग अकारण अर्थ लाभ के लिए वृक्ष काटते हैं, उन्हें संतान सुख नहीं मिलता।

❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

कैसा फल देता है अस्त ग्रह

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

सूर्य ग्रहों का राजा है।

अस्त ग्रह क्या हैं? कोई भी ग्रह सूर्य से एक निश्चित अंश में आने पर अस्त हो जाता है। किसी ग्रह के अस्त होने का अर्थ है कि वह सूर्य के इतने निकट हो जाता है कि उसके तेज और ओज में छिप जाता है और क्षितिज पर दृष्टिगोचर नहीं होता। परिणामस्वरुप उसका प्रभाव नगण्य हो जाता है। अस्त ग्रह को कुपित और विकल भी कहा जाता है।

ग्रहों के अस्त होने के अंश- सभी आठ ग्रहों को अस्त होने का दोष होता है। सभी ग्रह सूर्य के निकट आने पर एक निश्चित अंश पर अस्त होते है। कौन सा ग्रह सूर्य से कितने अंश की दूरी पर अस्त होता है और उसके अस्त होने का क्या फल होता है इसका विवरण यहां प्रस्तुत है। चंद्र जब सूर्य से 12 अंश के अंतर्गत होता है तो अस्त होता है। मंगल 7 अंशो पर, बुध 12 अंशों पर, बृहस्पति 11 अंशो पर, शुक्र 9 अंशो पर और शनि 15 अंशो की परिधि में आ जाने पर अस्त होते है।

ये तो प्राचीन मान्यताएं है। वर्तमान में कुछ विद्वानों का मत है कि किसी ग्रह को तभी अस्त मानना चाहिए जब वह सूर्य या इससे कम अंश की दूरी पर हो। यह तथ्य सत्य के काफी निकट है। लेकिन इसका आधार यह मानना चाहिए कि जो ग्रह सूर्य से न्यूनतम अंशो से पृथक होगा, उसे उसी अनुपात में अस्त होने का दोष लगेगा। जो ग्रह सूर्य के बराबर अथवा उसके समीपी अंश पर होता है, उसे पूर्ण अस्त माना जाता है। सूर्य अंशात्मक युतिवाला ग्रह परम अनिष्टकारी हो जाता है। शेष बातों में थोड़ा बहुत शुभत्व रहता है। जो ग्रह सूर्य से 8 अंश की दूरी पर होता है, उसे आधा और जो सूर्य से 15 अंश की दूरी पर होता है उसे पूर्ण उदित माना जाता है।

अस्त ग्रहों का फल- सूर्य अंशात्मक युति वाला ग्रह परम अनिष्टकारी होता है। अस्त बिंदु की ओर बढ़ते हुए ग्रह अर्थात सूर्य के अंश से पीछे स्थित ग्रह की दशा में अधिक दुःख होते हैं। जो ग्रह अस्तंगत हो या जो राहु के स्पष्ट अंश के अति निकट हो, उसकी दशांतर्दशा में उस भाव के फल नष्ट हो जाते हैं जिस भाव में अस्त या राहु ग्रस्त ग्रह स्थित होता हे।

अस्तंगत ग्रह को कुपित ग्रह भी कहा जाता है। उसकी ऐसी दशा में परेशानियां लगातार आती रहती है। जातक पाप कर्मो के प्रति प्रवृत्त होता है और उसे विद्या, स्त्री, धन, पुत्र, सहयोगियों आदि से वंचित होना पड़ता हैं। संतान को विशेष कष्ट होता है तथा नेत्र रोग होते है। दशेश यदि जन्म समय में अस्त हो, तो उसकी दशा में जातक का बलवान लोगों से विरोध होता है। वह विभिन्न रोगों खासकर हृदय या उदर रोग और शत्रुभय से पीड़ित होता है उसे विपत्तियाँ सताती हैं और समाज में उसकी मानहानि होती है। धनागम में बाधा आती है। राजपक्ष से भय होता है।

अस्तयुति के अंश से बाहर आया हुआ अर्थात् अंशात्मक युति से आगे बढ़ा हुआ कोई ग्रह अपनी दशा में चाहे उदित न भी हुआ हो क्रमशः उदयबिंदु की ओर बढ़ता हुआ शुभफल को पुष्ट करता जाता है। उसके साहसवृद्धि, खुशी, राजा की प्रसन्नता, धनागम व शोभावृद्धि जैसे फल होते है। पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन हो जाता है। आधा अस्तग्रह अपना आधा प्रभाव देता है। पूर्ण उदित ग्रह अपना पूर्ण प्रभाव देता है।

विभिन्न ग्रहों के अस्त होने का फल

चंद्र-जन्मकुंडली में चंद्र अस्त हो तो सर्वथा अस्त अर्थात् अमावस्या के चंद्र की दशा में जातक का अपने लोगों से विरोध होता है। उसका जीवन दुखमय होता है उसके स्त्री सुख में कमी और राज्य, अग्नि या विष से भय होता है। उसे माता से वियोग होता है। और उसकी खडी फसल या व्यवसाय में अंतिम क्षणों में हानि होती है।

बुध-बुधअक्सर अस्त रहता है, क्योंकि यह सूर्य के निकटतम ग्रह है और सूर्य से एक निश्चित अंश तक ही दूर रहता है। यही कारण है कि बुध के अस्त होने का दोष नहीं माना जाता है। बुध

शेष पेज 19 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

महर्षि वेदव्यास

कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा
आगरा।

साक्षात नारायण ही जगदुरु व्यास के रुप में अज्ञानान्धकार में निमंग प्राणियों को भक्ति, ज्ञान, सदाचार, नीति एवं धर्माचरण की विक्षा देने को अवतीर्ण हुए, सात चिरंजीवियों में से एक है। वे आज भी अजर अमर है। वे वशिष्ठ जी के प्रपौत्र, शक्तिऋषि के पौत्र, पाराशर जी के पुत्र और महाभागवत श्री शुकदेव जी के पिता है। यमुना के द्वीप में प्राकव्य होने से ये द्वैपायन कहलाये। वेद संहिता का विभाजन करने से ये व्यास किंवा वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हुए। बादारायण भी इन्हीं का नाम है। आज के विश्व का सारा ज्ञान–विज्ञान महिर्ष वेद व्यास जी का ही उच्छिष्ट है, अतः ''व्यासोच्छिलं जगत सर्वम'' ही उक्ति प्रसिद्ध है। समस्त पुराण, उपपुराण, ब्रह्मवसूत्र, व्यास स्मृति आदि इन्हीं की रचनाएं है।

महर्षि वेदव्यास जी के वचन अव्यव आदर्णीय, ज्ञानवर्धक एवं अनुपालनीय है। उनके कुछ नीति वचन उल्लेखित है–

1. कलियुग महिमा–जो फल सतयुग में दसवर्ष तपस्या, ब्रह्मचर्य और जाप आदि से मिलता है, वही त्रेता में एक वर्ष, द्वापर में एक मास और कलियुग में एक दिन–रात में प्राप्त होता है। सतयुग में ध्यान, त्रेतायुग में यज्ञ, द्वापर युग में देवार्चन से जो फल प्राप्त होता है, वही कलियुग में हरिनाम संकीर्तन से मिल जाता है।

2. सुख–दुख, जन्म–मृत्यु–सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख प्रत्येक प्राणी के जीवन में ठीक उसी तरह आते रहते है जैसे चलते पहिये की जो तान ऊपर से नीचे, और नीच से ऊपर आती रहती है।

3. पाप के स्वीकार से पाप नाश–जो मोहवश, अधर्म का आचरण कर लेने पर उसके लिये सच्चे हृदय से पश्चाताप करता है, वह पाप से मुक्ति पाता है, यदि धर्मवादी संत के सामने अपना पाप कह दिया जाता है, तो प्राणी पाप जनित अपराध से शीघ्र मुक्ति हो जाता है।

4. सत्य–सत्य वचन बोले, और मन से पवित्र ज्ञान पढ़े परमपिता परमेश्वर ही सत्य है, सारा जगत असत्य है।

5. पाप और उसका फल–असत्य भाषण, पर स्त्री संग, अभक्ष्यलक्षण, तथा अपने कुलधर्म के विरुद्ध आचरण से, कुल का शीघ्र नाश हो जाता है। अकारण वैर न करें, विवाद से दूर रहे, किसी की चुगली न करें और चुगलखोर के साथ न रहें।

6. निन्दा न करें मिथ्या कलंक न लगावें–

1. अपनी प्रशंसा न करें, तथा दूसरों की निन्दा न करें।

2. वेद निन्दा, देव निन्दा से बचे न करे, न सुनें।

जहाँ, गुरु, देवता, वेद, पुराण की निन्दा हो वहाँ चुप रहें, और शान्ति से यह स्थान छोड़कर चले जायें, क्योंकि ऐसे निन्दक को रौरक नरक की प्राप्ति होती है।

1. झूठा कलंक लगाने से कलंक लगाने वालों को घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

2. ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी और गुरुपत्नी गमन पाप से बचें।

महायज्ञ पाँच है।

1. माता–पिता की पूजा **2.** पति की सेवा **3.** सब के प्रति समभाव **4.** मित्रों से द्रोह न करना **5.** भगवान हरि संकीर्तन

पिता धर्म रुप है, माता स्वर्ग है, माता पिता की सेवा उत्कृष्ठ तपस्या है, इससे सभी देवता प्रसन्न होते है। माता सर्वतीर्थमयी है, पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरुप है, माता–पिता की प्रदक्षिणा से पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। गणेश जी द्वारा शिव–पार्वती समुची की परिक्रमा ने ही प्रथम देव के रुप में पूज्यनीय एवं वन्दनीय है।

जो नीच पुरुष माता–पिता को कष्ट देता है, अपमानित करता है वह महापलय पर्यन्त तक नरक में निवास करता है। तथा जो पुत्र अपने रोगी, वृद्ध, जीविका से रहित, अन्धे और बहरे माता–पिता का त्याग करता है। वह रौरव नरक गामी होता है।

7. गोचर भूमि– जो गोचर भूमि दान देता है, उसका स्वर्ग में निवास होता है, जो फल गोदान का मिलता है, उसी फलका भागी होता है, तथा जो पवित्र वृक्ष एवं गोचर भूमि का उच्छेदन करता है उसकी 21 पीढियाँ रौरव नरक भोगती है।

8. गंगा महिमा–अविलम्ब सदगति का उपाय सोचने वाले सभी स्त्री पुरुषों के लिये गंगा जी ही ऐसा एक मात्र तीर्थ है जिनके दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते है। गंगाजी में स्नान करने से आचमन लेने से और पितरों के तर्पण से महापातको का क्षय होता है, जैसे अग्नि के सम्पर्क में आने से रुई और तिनके एक ही क्षण में दग्ध हो जाते है, उसी प्रकार गंगाजल के पान से सभी पाप दग्ध हो जाते है। और तो गंगा–गंगा नाम लेने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है।

गंगा गंगेति यो ब्रयाद योजनाना शतैरपि।
मुच्यते सर्वापापेम्यो, विष्णुलोक स गच्छति।।

9. मनुष्य रुप में देवता के लक्षण हैं–

1. जो द्विज, देवता, अतिथि, गुरु, साधु, और तपस्वियों के पूजन में सलंग्न है।

2. नित्य तपस्यापरायण, धर्मनीति में स्थित, धर्मशील, क्रोधजयी, सत्यावादी, लोभहीन, प्रिय बोलने वाला, शान्तचित्त, धर्मशास्त्र प्रेमी, दयालु, लोकप्रिय, मृदभाषी, वाणी पर अधिकार रखने वाला, गुणवान, साक्षर विद्वान है।

शेष पेज 18 पर.....

दक्षिण दिशा-कुछ भ्रांतियां

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर

जन–साधारण में यह आम धारणा प्रचलित है कि दक्षिण मुखी भवन या जमीन प्रशस्त नहीं होती है। इस दिशा में रहना भी शुभ नहीं माना जाता है जबकि वास्तुशास्त्र के किसी भी ग्रन्थ में दक्षिण मुखी भूमि को निर्माण के लिए अशुभ नहीं माना हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार दक्षिण–दिशा के स्वामी 'यम' अर्थात् यमराज हैं। दक्षिण दिशा सुख समृद्धि एवं शान्तिदायक हैं। दक्षिण दिश को मुक्तिकारक दिशा भी कहा गया है। चारों दिशाओं और विदिशाओं को विशेष महत्व है तथा सभी दिशाओं और विदिशाओं को शुभ माना गया हैं। लेकिन आधुनिक वास्तुशास्त्रियों ने दक्षिण मुखी भूखण्डों को एक प्रकार से त्याज्य घोषित कर दिया हैं। यदि वास्तु नियमों का पालन करते हुये मकान का निर्माण किया जाये तो दक्षिण दिशा का भूखण्ड स्वामी को जीवन में असीम ऊंचाइया प्रदान करने में सक्षम हैं। वास्तु ग्रन्थों के अनुसार इक्यासी पद वास्तु में चारों दिशाओं के 32 द्वारों और उनके फल का विशद वर्णन किया हैं। इसके अनुसार पूर्व, पश्चिम और उत्तर दक्षिण दिशाओं में दो–दो द्वारों की उत्तम स्थिति और सर्वोत्तम फल कथन किया गया है।

दक्षिण दिशा भौतिक सुसाधन प्रदायक तथा भोगों में वृद्धि कारक हैं। आधुनिक युग में जातक की सफलता का मापदंड उसका धन वैभव, भौतिक सुख साधनों की उपलब्धता एवं उसकी भोगो में लिप्तता है। ऐसे में दक्षिण दिशा का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। दक्षिण मुखी भूखण्ड में यदि उत्तम वास्तु संयोजन, उचित मुख्य द्वार योजना के साथ किया जाये तो दक्षिण मुखी भूखण्ड व्यक्ति को जीवन में अनन्त ऊंचाइयां प्रदान करने में सक्षम है। सभी ग्रन्थों ने शयन कक्ष के लिए दक्षिण दिशा को उत्तम माना हैं। शास्त्रीय आधार पर शयन कक्ष के लिए दक्षिण दिशा सर्वोत्तिम हैं। तिजोरी व घर के मुखिया के लिए दक्षिण दिशा में शयनकक्ष सर्वोत्तम है। दक्षिण दिशा सुख, समृद्धि, मुक्ति, शांतिदायक प्रवृत्तियों की पोषक पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दक्षिण मुखी भूखण्ड का विश्लेषण वास्तु अनुरुप किया जाये तो वह भूखण्ड समृद्धिशाली होता है। ❋❋❋

अनुशासित जीवन शैली सुवासित जीवन धारा

सुरेश अग्रवाल
आगरा

प्यार और अनुशासन में पलने वाले बच्चे अपने माता–पिता और बुजुर्गो का ज्यादा आदर करने वाले और कानून का पालन करने वाले नागरिक बनते हैं। अच्छे माता–पिता अनुशासन की बात पर बच्चों की थोड़ी देर ररहने वाली नाराजगी से कोई समझौता नहीं करते हैं। यदि प्रत्येक परिवार में अनुशासन का पालन किया जाए, तो समाज में होने वाले अपराधों में 95 प्रतिशत की कमी स्वतः ही आ सकती है।

आखिर, अनुशासन है क्या अनुशासन आजादी को छीनना नहीं है–अनुशासन किी नियम को थोपना नहीं है–अनुशासन नाजायज नहीं है–अनुशासन छड़ी उठाकर पीटना भी नहीं है–अनुशासन एक प्रेम पूरित आग्रह है–एक दिशा बोध है–सीख है। अनुशासन अपने बड़ों और मार्गदर्श को के निर्देशानुसार कुछ भी करने का नाम है– उनके प्रति सम्मान का यही प्रदर्शन है। नियमों का अनुपालन ही अनुशासन है। यह प्यार का दर्पण है।

अनुशासन आजादी देता है–हमारी मूल प्रवृत्ति, परिणाम की परवाह किए बिना ही, हमें मनमानी करने को उकसाती है। मन मानी करने का नाम आजादी नहीं है, बल्कि मन को वश में रखने से ही आजादी मिलती है। सारी इच्छाँए हमेशा पूरी नहीं हो सकती हैं। अनुशासन का पालन न करने से सफलता की आशा करना व्यर्थ है।

अनुशासन प्यार की एक सीढी है कई बार हमें किसी की भलाई करने के लिए बुरा भी बनना पड़ता है। सारी दवाईयां मीठी नहीं होती–सारे आपरेशन बिना तकलीफ दिए नहीं होते, फिर भी डाक्टर और मरीज दोनों को इनका सहारा लेना ही पड़ता है।**एक पतंग हवा में ऊपर टिकी रहती है–** तो सिर्फ एक डोरी से। डोरी से टूटते ही पतंग नीचे आ जाती है। हमारे जीवन में भी ऐसा ही होता है। कुछ चीजों के बारे में हम सोचते हैं कि वे हमें रोक नही है, लेकिन वास्तव में वे हमें ऊपर उठा रही हैं। अनुशासन पतंग की तरह हमें ऊँचाई की ओर ले जाता है।अनुशासन के लिए संयम और त्याग की जरुरत होती है। अपनी अनियमित कड़ी मेहनत से

शेष पेज 18 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लेक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

नवरात्रि महोत्सव

श्रीमति रेनू कपूर
आगरा

भारतीय वर्ष का शुभारंभ चैत्रमास की प्रतिपदा से माना जाता है और चैत्रमास की प्रथमतिथि प्रतिपदा से ही नवरात्र का भी शुभारंभ होता है। धार्मिक उत्सवों में नवरात्र का महोत्सव सभी हिन्दु बडी श्रद्धा और भक्ति से मनाते है। नवरात्रों में देवी के नौ रुपों की मंगलमय स्तुति से व्यक्ति को जो दिव्य ऊर्जा प्राप्त होती है जिससे उसका कल्याण होता है। भारतीय संस्तुति में देवी को सौभाग्य दायिनी व अरोग्यदायिनी ऊर्जा का प्राणतत्व माना है। इस उत्सव पर देवी भक्त माँ जगदम्बा के महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरुप की पूजा, अर्चना, व्रत, अनुष्ठान आदि पुण्यदायी कठिन साधना कर अपने जीवन को धन्य बनाते है।

ऐसा माना जाता है कि आदि शंकराचार्य की प्रारंभ में शक्ति की साधना के प्रति विशेष श्रद्धा नहीं थी लेकिन जब उन्हें एक दिन जगदाती शक्ति का साक्षात्कार हुआ तब उनके हृद्धय में शक्ति के लिये अटूट विश्वास व श्रद्धा बनी। यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड विशिष्ट शक्ति से ही क्रियाशील है क्योंकि शक्ति के बिना तो शिव भी शव हो जाते है। जगदात्री जगदम्बा की शक्ति के साथ ब्रह्मा जी सृष्टि का सृजन करते हैं, और श्री हरि विष्णु जी पालन का कार्य करते है तथा देवाधिदेव महादेव संहार का कार्य करते है।

देवताओं के कहने पर जब भगवान विष्णु की आज्ञानुसार विष्णुचक्र के द्वारा सती की मृत देह के इक्यावन टुकड़े जिन–जिन स्थानों पर गिरे उन स्थानों पर इक्यावन शक्ति पीठों की स्थापना हुई। तंत्र चूड़ामणि के अनुसा शक्तिपीठों की संख्या वावन भी बताई गई है। शिवचरित्र और देवी भागवत के अनुसार इक्यावन व एक सौ आठ शक्ति पीठों का भी वर्णन किया गया है। नवरात्र जैसे विशेष अवसर पर माँ जगत जननी अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ इस धरती पर अवतीर्ण होती है और शक्ति पीठों में निवास कर भक्तों के सभी मनोरथों को पूर्ण करती है, इन शक्ति पीठों की विशेषता यह हैं कि ये सभी शक्तिपीठ अटूट श्रद्धा व भक्ति करने वाले व्यक्ति के ग्रह दोषों का भी निवारण करने में सर्मथ है।

पश्चिमी बंगाल के कोलकाता में स्थित कालीघाट स्थान पर ग्रहों के दोषों का शमन होता है यहाँ विशेषरुप से शनि ग्रह, मंगल, ग्रह तथा राहु ग्रह से सम्बन्धित दोषों का निवारण होता है। बंगाल के ही ताराचण्डी शक्तिपीठ में अघोर साधक द्वारा वामतन्त्र की साधना के द्वारा अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। बंगाल के ही अट्टहास शक्तिपीठ में बुध ग्रह व केतु ग्रह के दोषों का निवारण होता है बंगाल में शक्ति पीठों की संख्या दस या ग्यारह मानी जाती है यह स्थान शक्ति उपासना का विशिष्ट केन्द्र माना जाता है और इसी कारण दुर्गा पूजा का उत्सव महाउत्सव के रुप में मनाया जाता है।

उत्तर प्रदेश के भू भाग में देवी के तीन दिव्य शक्तिपीठ हैं जो गंगा यमुना की पावन स्थली शक्तिस्वरुपा माँ विन्ध्यावासिनी की निवास स्थली वृन्दावनधीश्वरी श्री राधारानी की लीला स्थली औ अनन्त ब्राह्मडों का पोषण करने वाली अन्नपूर्णा देवी की कृपास्थली भी है। मथुरा में चामुण्डा शक्तिपीठ में शिवपरिवार व उछिष्ट गणपति की साधना बुध ग्रह के दोषों का शमन करती है तथा शिवशक्ति की पूजा अराधना से शनि, राहु, मंगल व चन्द्र ग्रहों के दोषों निराकरण व्यक्ति को खुशहाल व सुख समृद्धि से परिपूर्ण करता है। वाराणसी में स्थित मीर घाट पर विशालाक्षी मन्दिर में की गई साधना व्यक्ति को धन धान्ययादि की प्राप्ति कराती है। इसी शक्तिपीठ पर भैरव साधना व देवी स्तवन और हवन शनि व राहु गह के दोष दूर कर मोक्ष प्रदान करती है। उड़ीसा के उत्कल प्रदेश में राजपूर में स्थित विरजा देवी का मन्दिर सूर्य ग्रह के दोषों का निवारण होता है, कपिल पुराण में उत्कल प्रदेश को कृष्णार्क–पार्वती

शेष पेज 19 **पर**.....

500/- **1100/-**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

16 अप्रैल - 15 मई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–धन प्राप्ति का योग घटित होने की संभावना रहेगी। बन्धु सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन की परेशानी एवं चिन्ता रहेगी। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। आय से ज्यादा खर्चे होंगे। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में वायुविकार रोग होने की संभावना रहेगी। मास मे आपको राज भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। ध न लाभ होने की संभावना रहेगी। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। इस मास में स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। ध न लाभ होने की संभावना रहेंगी। स्थानान्तर का विचार होगा। पत्नि का पूर्ण सुख एवं पत्नि पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। कारोबार या व्यवसाय ठीक चलेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में उदर विकार होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी। गुप्त शत्रु से भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। निजीजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आयेंगी। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। इस माह में शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा परन्तु गुप्त शत्रु से बचें।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में उदरविकार रोग होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। धन लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार ठीक चलेगा। सन्तान सुख मिलेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अप्रैल	मई
16 स्कन्द षष्ठी **17** भानु सप्तमी **18** दुर्गाष्टमी व्रत **19** राम नवमी, स्वामीनारायण जं. **22** कामदा एकादशी व्रत **23** प्रदोष व्रत, वमन द्वादशी **24** महावीर स्वामी जं., **25** पूर्णिमा, श्री हनुमान जं. **28** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **30** गुरु तेजबहादुर जं.	**1** विश्व मजदूर दिवस **2** कालाष्टमी (सीताष्टमी) व्रत **5** वरुथिनी एका. व्रत **7** रविन्द्र नाथ टैगोर जं., प्रदोष व्रत **9** अमावस्या (स्नान/दान) **12** श्री परशुराम जं. (अक्षय तीज) **13** श्री विनायक चौथ **14** श्री आद्य शंकराचार्य जं. **15** श्री रामानुजाचार्य जं.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अप्रैल–नही हैं। मई– 13

गृह प्रवेश मुहूत
अप्रैल– नही हैं। मई–13

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अप्रैल–18, 19, 22, 24, 25, 26
मई – 12, 13, 15,

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अप्रैल– 24, 25, 28
मई–2, 9, 12, 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

अप्रैल	मई
18 ता. सू.उ. से 29:44 तक	09 ता. सू.उ. से 06:02 तक
24 ता. सू.उ. से 18:45 तक	11 ता. 10:58 से 29:30 तक
	13 ता. सू.उ. से 28:54 तक

16 मई - 15 जून

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा। नई योजनायें बनायेंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कारोबार ठीक रहेगा। पत्नि से लाभ होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु कमजोर रहेंगे। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्रा का सुख मिलेगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में कष्ट होने का भय रहेगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। अपमान होने का भय रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास से स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय मध्यम रहेगा। निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। गुप्त शत्रु से बचें। कारोबार ठीक रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रु कमजोर रहेंगे। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। शत्रु का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची-इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। नेत्र रोग का भय रहेगा। पति को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मई	जून
18 दुर्गाष्टमी (श्री बगलामुखी जं.) **19** सीता नवमी **21** मोहिनी एकादशी व्रत, राजीव गांधी पुण्य ति. **22** प्रदोष व्रत, श्री नरसिंह जं. **24** पूर्णिमा व्रत **25** बुद्ध पूर्णिमा **27** पं. नेहरू पुण्य दि. **28** श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**1** शीतलाष्टमी पूजन **4** अचला (अपरा) एकादशी व्रत **5** प्रदोष व्रत **8** अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजन **11** रम्भा तीज व्रत **12** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **15** स्कन्द षष्ठी,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
मई– 16, 23, 25
जून – नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त
मई–16, 23, 25 जून – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मई–20, 22, 23, 25
जून – नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
मई– 31 जून –3

सर्वार्थ सिद्ध योग

मई	जून
16 ता. सू.उ. से 25:28 तक	02 ता. 07:12 से 29:23 तक
24 ता. 23:05 से 29:26 तक	04 ता. 09:47 से 29:23 तक
26 ता. 17:27 से 29:25 तक	08 ता. सू.उ. से 20:09 तक
	13 ता. सू.उ. से 07:54 तक

शयन विधि
(शयन हेतु आवश्यक जानकारी)

पं विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य

शास्त्रों व पुराणों के अनुसार दक्षिण दिशा के पैर करके सोना निषिद्ध माना गया है।

प्राच्यां दिशि शिरश्शस्तं याम्यायामथ वा नृप।
सदैव स्वपतः पुंसो विपरितं तु रोगदम्।।

श्लोकानुसार–सदा पूर्व व दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिए। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।

प्राक्शिरःशयने विद्याद्धनमायुश्च दक्षिणे।
पश्चिमें प्रबला चिन्ता हानिमृत्युरथोत्तरे।।

श्लोकानुसार-पूर्व की तरफ सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है। दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है। पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिन्ता होती है। उत्तर की तरफ सिर करके सोने से हानि तथा मृत्यु होती है अर्थात् आयु क्षीण होती है।

इस नियम के पीछे आरोग्य शास्त्रीय तथ्य है। विश्व के प्रत्येक अणु–रेणु में एक प्रकार का आकर्षक–प्रत्याकर्षण होता है। हर कण किसी न किसी विशाल कण की ओर आकर्षित होता है। परिणाम स्वरुप हर सूक्ष्म कण की एक भ्रमण गति होती है। पृथ्वी भी सूर्य की तरफ गुरुत्वाकर्षण के कारण आकृष्ट होती है। स्वंय सूर्य उससे बड़े सूर्य की तरफ आकर्षित होता है। 'ध्रुव' नामक तारे के पास विश्व निरंतर आकर्षित होता है। ध्रुव तारा जिस ओर होगा, उस दिशा में शरीर के अणु–रेणु आदि कणों का आकर्षण हेाता रहता है। पेट के अंदर के अन्न पदार्थ भी उसी दिशा से सूक्ष्म रुप से आकर्षित होते हैं।इस कारण उत्तर की ओर पैर करके सोने से शरीर के सभी सूक्ष्म तंतुओं का आकर्षण विरुद्ध होने से इसका लाभ शरीर को अपने आप मिलता रहता है। इसके विपरीत दक्षिण दिशा की ओर पैर करके सोने से शरीर के तमाम सूक्ष्म तंतुओं का आकर्षण उल्टी दिशा में होता है। इसलिए अन्न पाचन क्रिया में व्यवधान उत्पन्न होता है। इसके अलावा ज्ञान तंतुओं का उल्टा भ्रमण होने से मस्तक को थकान महसूस होती है। परिणामस्वरुप निद्रावस्था यथोचित समाधान नहीं दे पाती। इससे निरंतर बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं। इसलिए शास्त्र कहता है कि दक्षिण दिशा में पैर करके कदापि नहीं सोना चाहिए। टूटी खाट पर, सिर लटका कर के जूठे मुँह, नग्न होकर, सूने घर में, देवमंदिर में, शमशान में, अँधेरे में को तथा भीगे पैर नहीं सोना चाहिए।

धर्मसिंधु के अनुसार-शयन के समय मुख से ताम्बूल, ललाट से तिलक, और सिर से पुण्य का तयाग कर देना चाहिए।

दिन में नहीं सोना चाहिएं दिन में सोने सें यकृत पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उसके कार्य में बाधा होती है। कफ की वृद्धि दिन में सोने से शरीर में होने लगती है। कफ की वृद्धि होना, मृत्यु के समान माना गया है। सभी ऋतुओं में दिन में सोना निषिद्ध है? परंतु ग्रीष्म ऋतु में दिन में सोना निषिद्ध नहीं है। परंतु स्वस्थ्य व्यक्ति को तीव्र गर्मी के समय में भी कहीं छायादार स्थान में बैठकर किसी न किसी कार्य में स्वयं को व्यस्त रखना चाहिए। इसके सिवाय बालक, वृद्ध, रोगी, अधिक मात्रा व अधिक परिश्रम करने से थका हुआ व्यक्ति दिन में सो सकता हैं। जिन्होंने रात में जागरण किया है, वे भी रात्रि–जागरण के आधे समय तक दिन को सो सकते हैं।

किसी सोये हुए व्यक्ति को एकाएक नहीं जगाना चाहिए परंतु विद्यार्थी, नौकर, पथिक, भूख से पीड़ित, भयभीत, भण्डारी और **द्वारपाल-**ये सोये हुए हों तो इन्हें आवश्कतानुसार जगा देना चाहिए।सुंदर, स्वच्छ, पवित्र एवं आध्यात्मिक स्थल जहां शांति बनी रहती हों, ऐसे स्थान पर पवित्र आसन पर शयन करने से शीघ्र ही सुख पूर्वक नींद आती है। शयन से पूर्व यथासंभव भगवत्स्मरण करना न भूलें। अच्छे विचारों, अच्छे संकल्पों के साथ शयन कीजिये, रात्रि सुखकर होगी, प्रभाव भी स्फूर्तिमय और चैतन्यता से परिपूर्ण होगी। ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

दुष्परिणाम

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

बुद्धिमान व्यक्ति के परिणाम के साथ दुष्परिणाम पर भी विचार कर लें।

एक जंगल में पीपल का एक बहुत पुराना पेड़ था। उस पर अनेक पक्षी रहा करते थे। जिनमें कुछ बगुले के भी घोंसले उस वृक्ष पर थे। वृक्ष के नीचे एक सांप भी रहता था जो बगुलों के छोटे–छोटे बच्चों को खा जाता था। बच्चों की मृत्यु पर वे विलाप करते और सोचते कि इस सांप से हम अपने बच्चों की सुरक्षा कैसे करें, यह तो हमारे बच्चों को खा जाता है।

एक दिन बगुलों ने सभा की ओर सांप के विरुद्ध कुछ उपाय सोचने के लिए सभा में प्रस्ताव रखा–बगुलों के रिश्तेदार–सम्बन्धी सभी उस सभा में उपस्थित हुए।

सवाल था–"सांप से बच्चों की सुरक्षा कैसे की जाए?"

सभा में कई बुद्धिमान तथा दीर्घायु बगुले भी उपस्थित थे–किसी ने कुछ उपाय बताया, किसी ने कुछ।

एक बुढे तथा तजुर्बेकार बगुले ने परामर्श दिया–"भाईयों! मेरे दिमाग में एक उपाय है। यदि आप उस पर अमल कर सको तो मैं उसे सभा के सम्मुख पेश करुं।"

बगुलों ने उसकी आयु को देखते हुए उस बूढे को आदर और सम्मान के साथ एक ऊंचे ढेर पर बैठाया और उससे उपाय बताने का आग्रह किया।

तब वह बूढा बगुला बोला, "तुम मछलियां पकडकर उन्हें नेवले के बिल से लेकर सांप के बिल तक एक पंक्ति में फैलाकर डाल दो। इससे नेवला उन मछलियों को खाता हुआ सांप के बिल में घुस जाएगा और अन्त में वह सांप को मार डालेगा।"

बूढे का उपाय सभी बगुलों की समझ में आ गया। सबने उसकी प्रशंसा की और उसका धन्यवाद किया।

अगले दिन बगुलों ने बताए हुए उपाय की भांति ही किया। ये किसी तालाब से छोटी–छोटी मछलियां अपनीं चोंचों में दबाकर लाये और नेवले के बिल से सांप के बिल तक मछलियां की लाईन लगा दी।

नेवले ने जब यह देखा तो उसकी आंखे चकाचौध हो गयीं–वह सपने में भी नहीं सोच सकता था कि इतना भोजन उसे कुछ किये बिना ही प्राप्त हो जाएगा।

उसने मछलियों को खाना शुरु कर दिया– वह खाता जा रहा था और कहता जा रहा था–"वाह रे! ऊपरवाले, तेरा भी जवाब नहीं। तू जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है। कल तक तो मुझे अपने भोजन की तलाश में जगह–जगह भटकना पड़ता था और आज भोजन स्वयं मेरे पास चलकर आया–तेरी लीला भी निराली है, जिसे चाहे उसे दे, जिसे चाहे उससे दिया हुआ भी छीन ले।" नेवले के आज मजे आ गये थे, उसे ऐसा स्वादष्टि भोजन कभी नहीं मिला था।

नेवला मछलियां खाता–खाता सांप के बिल तक जा पहुंचा–सांप बिल के अन्दर मौजूद था उसे नेवले की गन्ध आयी तो वह भौचक्का–सा हो गया और अपने छुपने की जगह तलाश करने के लिए कुलमुलाने लगा।

सांप को कुलमुलाता देखकर नेवले ने उसे आसानी से पकड लिया और उसे जान से मार दिया।

अगले दिन नेवले को फिर कल की बात याद आ गई थी– वह सोच रहा था कि कल तो भगवान ने मेरे बिल तक मेरे खाने का प्रबन्ध कर दिया था, आज जब मुझे अत्यधिक भूख लगी है तो भोजन नहीं मिल रहा है।

नेवला घूमता–घूमता, भोजन की तलाश में उस वृक्ष के नीचे पहुंच गया। वृक्ष पर उसने बगुलों की चहचहाइट सुनी। उसके मुंह में पानी आ गया। वह सोचने लगा कि वृक्ष पर बगुले चहक रहे

500/- **1100/-**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

है। तो इनके बच्चे भी अवश्य होंगे।

वह यह विचार कर वृक्ष पर चढ़ गया और बगुलों के बच्चों को खा गया। नेवले के मुंह तो अब खून लग चुका था जोकि इतना मीठा था कि उसे वृक्ष पर ठहरने को मजबूर कर रहा था।

वह अन्य बगुलों की प्रतीक्षा में रात के समय भी उसी वृक्ष पर रहा और जब रात में बगुले अपने घोंसलों में आये तो वह एक–एक करके सब को खाता गया।

कथा सुनाकर हंस बोले, "इसलिए हम कहते है कि जब उपाय सोचो तो उसके दूरगामी दुष्परिणामों के विषय में भी सोचों, जब हम तुम्हें आकाश मार्ग से ले जायेंगे तब तुम्हें इस तरह उड़ते देखकर लोग तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे। अपनी हँसी उड़ती देखकर लोग तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे। अपनी हँसी उड़ती देखकर तुम अवश्य बोलोगे और बोलते ही नीचे गिरकर मर जाओगे।"

कछुआ उनकी बात सुनकर बोला, "मैं इतना मूर्ख थोडे ही हूं। कहने वाले जो चाहे कहें, मैं कुछ नहीं बोलूंगा।"

हंसों ने कछुए को बहुत समझाया, पर जब कछुआ उनके समझाने से नहीं माना तो विवश होकर वे उसे साथ लेकर उड़ चलें।

रास्ते में उन्हें ग्वालों का एक समूह मिला। कछुए को इस तरह आकाश में उड़ते देखकर उन्हें कौतूहल हुआ और वे उनके पीछे–पीछे दौड़ने लगें।

एक वाला बोला, "यदि यह गिर जाए तो मैं इसे पका कर खा जाऊंगा।" दूसरा बोला, "मैं तो इसे यहीं भूनकर खा जाऊंगा।"

तीसरा ग्वाला बोला, "नहीं, यहां नहीं। घर ले जाकर आराम से पका कर खाना चाहिए। इसका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है और कई बीमारियों में काम आता है। इसका तेल तो बहुत ही अच्छा है, बच्चों के कई प्रकार के दर्दो में काम आता है। इसका तो तेल निकालकर रख लेना चाहिए और आवश्कतानुसार उसे प्रयोग करना चाहिए।"

कछुआ ग्वालों की सारी बात सुन रहा था। मन ही मन वह कहा रहा था, "तुम सब कुछ नहीं करोंगे।"कछुए को गुस्सा आ रहा था–"तुम सब देखते रह जाओगे और मेरे ये हंस मित्र मुझे बहुता दूर ले जाएंगे। न तो मैं नीचे गिरुंगा और न ही तुम मेरा कुछ बिगाड़ सकते।"

कछुआ बड़बड़ाए जा रहा था–एक बार जब ग्वालों ने एक साथ मिलकर जोरदार आवाज में कहा, "अरे लोगों देखो! आकाश में कछुए भी उड़ने लगे।" अब कछुए से न रहा गया– वह तुरन्त बोला, "अरे मूर्ख ग्वालों! तुम सब अन्धे हो, तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है कि मेरे मित्र हंस मेरी सहाय.....य.....य.....ता..... ।"

इतना कहते–कहते कछु के मुंह से लकड़ी छूट गयी और वह जमीन पर आ गिरा और प्राण पखेरु उड़ गये।

कछुआ अपने मित्र हंसों का उपदेश भूल गया था कि उसके इस उपाय का दुष्परिणाम ऐसा भी हो सकता था।

कथा सुनकर चकवा मन्त्री बोला, "इसीलए मैं कहता हूं कि जो हितकारी मित्र की बात नहीं मानता है उसका नाश होता है।"

तभी हिरण्यगर्भ का गुप्तचर बगुला आकर बोला, "स्वामी! मैंने पहले ही कहा था कि किले का क्षण–क्षण संशोधन कर लें। आपने नहीं किया। उसी भूल का यह दण्ड है।" किले में आग गिद्ध द्वारा सिखाए मेघवर्ण नामक कौए ने लगाई थी।

राजा लम्बी सांस लेकर बोला, जो मनुष्य स्नेह या उपकार से शत्रुओं पर विश्वास करता है। वह वृक्ष की शाखा पर सोए हुए मूर्ख की भांति विपत्ति में पड़कर सत्य ज्ञान पाता है।

गुप्तचर आगे बोला यहां आग लगाकर जब मेघवर्ण वापिस पंहुचा तो चित्रवर्ण ने प्रसन्न होकर कहा, मेघवर्ण को कूर्पर द्वीप का राज्य दे दो। जब सेवक कार्य सिद्ध कर ले तो उसे पुरस्कार, मन, वचन और दृष्टि से प्रसन्न करना चाहिए।

चकवा बोला, फिर क्या हुआ?"

गुप्तचर बोला, "प्रधानमन्त्री गिद्ध ने कहा, महाराज! यह ठीक नहीं है, कुछ और उपहार दीजिए। मूर्ख के साथ किया गया ढंग का व्यवहार जैसे भूसी कूटने के समान है, नीच पुरुष पर किया गया उपकार और धूल पर बनाया गया चिन्ह थोडी देर में ऐसे ही मिट जाता है; जैसे मूर्खो को दिया गया उपदेश नष्ट हो जाता है।"

ऊंचे पद पर नीच की नियुक्ति कदापि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि नीच अच्छे पद को पाकर स्वामी को ही मारना चाहता है; जैसे–"हूहा मुनि की कृपा से बाघ बन गया तो मुनिको ही खाने लगा था।"

चित्रवर्ण मन्त्री से बोला, "यह कथा कैसी है?"

मन्त्री बोला, "सुनिए मैं कथा कहता हूं– ।"

दुष्टता

नीच व्यक्ति श्रेष्ठ पद पाकर उपकारी को ही नष्ट कर ना चाहता है।

मन्त्री ने कथा कहनी आरम्भ की– गौतम ऋषि के आश्रम में महातप नामक ऋषि रहते थे। वे महातपस्वी थे। एक दिन उन्होंने देखा कि कौआ अपनी चोंच में किसी चूहे को लेकर उड़ा जा रहा था। अचानक चूहा कौए की चोंच से छूट गया और मुनि के आश्रम में आकर गिरा।

ऋषि इस दृष्य को देख रहे थे। जब चूहे को उन्होंने आश्रम में गिरते देखा तो अपने एक शिष्य से उसे उठाने को कहा। ऋषि को चूहे पर दया आ गयी थी। उन्होंने चूहे को अपने हाथ में लेकर पहले तो उसकी चोट आदि देखी और फिर उसे एक पिंजरे में रखा तथा उसका पालन–पोषण करना शुरु कर दिया।एक दिन किसी बिल्ली की उस चूहे पर दृष्टि पड़ गई। जब वह उसे पकड़ने दौड़ी तो चूहा दौड़कर ऋषि की गोद में छिप गया।ऋषि को उस पर दया आयी तो उन्होंने उसे चूहे से बिलाव बना दिया। जब वह बिलाव बन गया तो कुत्ते उसे काटने को दौड़ते, ऐसे में वह बिलाव कुत्ते को देखकर भागने लगा। तब ऐसा देखकर ऋषि बोला, "तू कुत्ते से डरता है, जा तू भी कुत्ता बन जा।"

ऋषि ने उसे आर्शीवाद दिया तो वह कुत्ता बन गया।

बिलाव से कुत्ता बन जाने के बाद वह बाघ से डरने लगा। उसे बाघ से डरते देखकर ऋषि ने उसे भी बाघ बना दिया।ऋषि ने उसे

चूहे से बाघ बनाया था। इसलिए वह ऋषि उसे उसके असली स्वरुप चूहे रुप में देखता था। जब कि लोग, बाघ और ऋषि को एक साथ देखकर कहते थे–"यह बाघ पहले चूहा था। बाघ तो इसे ऋषि ने बनाया है।"ऐसी बातें जब बांघ बना चूहा सुनता तो उसे ऋषि पर गुस्सा आता और फिर स्वयं पर वह क्रोधित होता। चूहा नहीं चाहता था कि ऋषि का नाम लोग उससे पहलें लें।

ऐसे में बाघ बने चूहे ने सोचा–जब तक यह ऋषि जिन्दा है तक तक यह बात समाप्त नही होगी, क्यों न इसे ही मार दें।यह सोचकर बाघ ने एक दिन सुअवसर जानकर ऋषि को मारना चाहा। ऋषि तपस्वी था, उसने उसके मन की बात जानकर मुस्कुराकर कहा, "तू फिर चूहा हो जा।"

ऋषि के इतना कहते ही बाघ पुनः चूहा बन गया।

कथा सुनाकर मन्त्री गिद्ध बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि नीच बड़ा बनने के बाद भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता। वह लोभ करता है और नष्ट हो जाता है। उसे राजा बनाना मुसीबत मोल लेनी है। एक बार बगुले ने उत्तम, मध्यम और अधम कोटि की मछलियां खाकर जब केकड़े पर चोंच मारी तो अपने प्राण ही गंवा बैठा था।"

चित्रवर्ण बोला, "यह कौन–सी कथा है?"

"सुनिए महाराज, मैं सुनाता हूं–" गिद्ध मन्त्री बोला। ❋❋❋

शेष पेज 04 से आगे.....

सफल यात्रा के लिए

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कौशलपुर राजा।।

पुत्र प्राप्ति हेतु

प्रेम मगन कौशल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान।।

मनोरथ की सिद्धि हेतु

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिसरारी।।

हनुमान भक्ति हेतु

सुमिरि पवन सुत पावन नामू। अपने बस करि राखे राम।।

विचार की शुद्धि हेतु

ताके जुग पद कमल मनावऊं। जासु कृपा निरमल मति पावऊं।।

ईश्वर से क्षमा हेतु

अनुचित बहुत कहेउं अग्याता। छमहु क्षमा मंदिर दोउ भ्राता।।

संपूर्ण तुलसी दर्शन को समझने के लिए रामायण के अतिरिक्त कवितावली, दोहावली, विनय पत्रिका, बरयै रामायण आदि ग्रंथो का अध्ययन आवश्यक है। ❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे.....

कहीं बेहतर है, नियमित रुप से की गई थोड़ी सी कोशिश, जो अनुशासन से ही आ सकती है। समाज के प्रति अनुशासित दायित्व निभाना, प्रत्येक नागरिक का नैतिक धर्म होना चाहिए। अनुशासन और आजादी दोनों साथ–साथ चलते हैं। एक अनुशासित नागरिक से ही किसी देश की पहचान होती है।

सफल व्यक्ति कोई अलग काम नहीं करते,
हाँ, वे हर काम अनुशासन में रह कर करते हैं।

❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

3. घी, गाय के दूध, दही, आदि तथा निरामिष भोजी है।

4. आथित्य, दानशील, एवं पार्षण आदि कर्मो में प्रवृत्ति है।

5. शुभकर्म, व्रत, यज्ञ, देवपूजन, एवं स्वाध्यायी है, वही मनुष्य देवता है।

सब का उद्धारक–

1. जो जितेन्द्रिय, दुर्गणों से मुक्त, नीतिशास्त्र के तत्वों को जानने वाला है, वह देव स्वरुप है।

2. पुराणों और वेद में बताये पुण्यकर्मो का स्वयं आचरण करता है, यम–नियम का पालन करता है।

3. शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य एवं गणेश का उपासक है।

4. पितरों का तर्पण करता है।

5. वैष्णव की सेवा करता है।

सब का नाशक–

1. विश्वासघाती, कृतघ्न, व्रत का उलंघन करने वाला, ब्राह्मण देवताओं का द्वेषी।

2. माता, पिता, गुरुजन एवं बालको का पोषण नहीं करता।

3. मोक्ष शास्त्र में श्रृद्धा नहीं रखता।

4. मदिरा पीने एवं जुआ खेलने में आसक्ति है।

5. स्मृतियों, पुराणों तथा धर्मशास्त्रों के विपरीत आचरण करता है।

6. नीचवृत्ति से धन संग्रह करता है।

7. गुरुजनों की निन्दा में प्रवृतिक है तथा दीन तथा गरीबों, अनाथों को पीड़ित करता है।

संस्कार–सभी पुराणों और धर्मशास्त्रों में संस्कार की आवश्यकता बतलायी गयी है जिस प्रकार खानों से सोना और लोहा निकलते समय इसके कण विभिन्न प्रकार की मिट्टयों में लिप्त होते हैं। शुद्ध सोना और लोहा या हीरा प्राप्त करने के लिए इसे आग पर तपाकर विशुद्ध वस्तुओं को हटाया जाताह है तब कहीं जाकर शुद्ध सोना या लोहा प्राप्त होता है उसी प्रकार प्राणी तभी शुद्धता पूर्ण होता है जब कि विभिन्न संस्कारों रुपी तापयुक्त होता है। महर्षिव्यास जी द्वारा सोलह संस्कार प्रतिपादित है। 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन (पुत्र प्राप्ति के लिए) 3. सीमन्तोनयन (गर्भ के छटे या आठवें माह में), 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकरण, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन,11. वेदारम्भ, 12. केशान्त, 13. वेदस्नान, 14. विवाह, 15, त्रेताग्निसंग्रह (अन्तिम/अन्त्येष्ठि संसकार) ।संस्कार के साथ–साथ आचार विचार में शुद्धता, देवोपासना, यज्ञ, वृतोपवास तथा दान भी जीवनचर्या के मुख्य अंग है।प्राणी मात्र का सबसे बड़ा दुश्मन प्रमाद है, प्रभाव के वशीभूत प्राणी हमेशा इस अंधकार से ग्रसित है कि वह बहुत ही शक्तिशाली, पूर्ण ज्ञानी है और धर्मात्मा तथा वैभवशाली है, अन्य सभी को अपने से तुच्छ समझता है। प्रमादी प्राणी प्रमाद से वशीभूत होकर हर श्रेष्ठ और अच्छे कार्यो को कल पर टालता रहता है। और वह जीवन में कल कभी आती नहीं। यहि सोचते–सोचते जीवन समाप्त हो जाता है और शुभ कार्य नहीं हो पाता है। इसीलिए सतपुरुषों ने कहा है कि "कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। फल में परल्यै होइगी, बहूरि करेगो कब।।" ❋❋❋

शेष पेज 09 से आगे.....

और सूर्य की युति को बुधादित्य योग के नाम से जाना जाता है। यह एक प्रसिद्ध और शुभयोग है जो इस कथ्य को तथ्य में परिवर्तित करता है कि बुध को अस्त होने का दोष नहीं होता है। फिर भी अपनी दशा में खांसी, दमा आदि रोग अत्यधिक परिश्रम, धन की कमी व दुख देता है।

गुरु–जन्मकुंडली में गुरु अस्त हो, तो उसकी दशा में जातक को ज्वरादि से पीड़ा, शरीर में कमजोरी, कमर के ऊपर कष्ट आदि होते हैं। वहीं चारित्रिक दोष से ग्रस्त होता है जिसके फलस्वरुप बसी दुनिया के उजड़ने के योग बनते हैं।

शुक्र–शुक्र अस्त हो, तो उसकी दशा में पुराने मकान में निवास, शुभ कार्यो के संपन्न होने में बाधा, स्त्री सुख में कमी, भाईयों से वियोग तथा कलह की संभावना रहती है।

शनि–अस्तंगत शनि की दशा में आय व व्यय बराबर, युद्ध में पराजय, संतोष में कमी, मानहानि और अनेक क्लेशों के कारण मन में उदासी होती है।

अस्त ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव–अस्त ग्रह जीवन के दो पहलुओं पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। जन्मांग में भिन्न भावों से भिन्न पहलुओं को देखा जाता है जैसे सप्तम भाव से स्त्री सुख और द्वितीय से धन और कुटुम्ब। इसी प्रकार ग्रहों के नैसर्गिक गुण व दोष भी होते है।जब कोई ग्रह अस्त होता है तो उसके नैसर्गिक गुण प्रभावित होते हैं। साथ ही वह जिस भाव का स्वामी होता है उसके फलों में भी विलंब करता है। उदाहरण के लिए यदि बृहस्पति अस्त हो और सप्तम भाव का स्वामी हो, तो जातक के न केवल स्त्री सुख में बाधा आएगी बल्कि उसमें विवेकशीलता का भी अभाव होगा। इसी प्रकार यदि शुक्र चतुर्थ भाव का स्वामी होकर अस्त हो और अष्टमस्थ हो, तो व्यक्ति में कामशक्ति का अभाव होता है और वह यौन रोग से पीड़ित होता है। माता के सुख में न्यूनता आती है और वाहन और भवन का अभाव रहता है।अस्त ग्रह को किसी भी स्थिति में बली नहीं मानना चाहिए। अस्त ग्रह जीवन के किसी न किसी पक्ष को अभावग्रस्त रखता है लेकिन यदि सूर्य से उसका अंशात्मक अंतर 3 अंश से अधिक हो, तो उसके अस्त होने का दोष नष्ट या कम हो जाता है।

अस्त ग्रह शुभफल भी देता है– यद्यपि अस्तग्रह हमेशा दुष्फल ही देता है लेकिन इस सिद्धांत को ग्रह के नैसर्गिक गुणों से जोड़कर देखना चाहिए क्योंकि कुछ स्थितियों में अस्त ग्रह अपने भाव (जिसका कि वह स्वामी है) के लिए शुभ होता है।सामान्यता सभी के कुछ गुण और कुछ दोष होते हैं। लेकिन षष्ठ, अष्टम और द्वादश भाव शुभ फलों की तुलना में अशुभ फल अधिक देते है। कुछ विद्वान मानते हैं कि अस्त ग्रह षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश, हो तो भावों की वृद्धि होती है। अर्थात ये भाव अपने अशुभ परिणामों को प्रकट नहीं कर पाते हैं। यद्यपि इसका दूसरा पक्ष भी है लेकिन वह गौण है। यदि इन भावों के स्वामी अस्त हो, तो समृद्धि आती है और कार्यो में सफलता मिलती है। एक दृष्टि से यह स्थिति विपरीत राजयोग जैसी है। ❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे.....

हराः कहा गया है अर्थात् यहाँ भगवान विष्णु, सूर्यदेव, पार्वती देवी और शिव नित्य निवास कर जप–तप करने वालों का कल्याण करते है। विरजापीठ के नाभिगया क्षेत्र में श्राद्ध तर्पण आदि करने का विशेष महत्व है।

सम्पूर्ण भारत का कामाख्या शक्ति पीठ में तंत्र साधना के माध्यम से त्रिताप दोषों का निवारण करता है यह शक्ति पीठ असम का कालिका पुराण व देवी पुराण में सभी इक्यावन शक्तिपीठों में अग्रगण्य व सर्वश्रेष्ठ शक्तिपीठ कहा गया है।

कोल्हापुर के करवीर क्षेत्र में दिव्य शक्ति पीठ है जहाँ माँ महालक्ष्मी के रुप में सदैव विराजमान रहती है देवी के बारे में विभिन्न पुराणों व ग्रन्थों में प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस शक्तिपीठ की महिमा व प्रशंसा गाई है। इस शक्ति पीठ में भोग और मोक्ष प्रदान करने वाली श्री महालक्ष्मी की पूजा अर्चना व्यक्ति के शुक्र जनित दोष दूर कर सर्वसुखसम्पन्न बनाती है। इसी प्रकार अन्य भी शक्ति पीठ दिव्य ऊर्जा से ओत प्रोत है जगत जननी माँ आदि शक्ति का नवरात्रि महोत्सव अटू श्रद्धा और विश्वास पूर्वक करने से व्यक्ति की कामनायें पूर्ण होती है और वह अनन्त सुख सम्पदा की प्राप्ति करता है। ❋❋❋

शेष पेज 05 से आगे.....

क्षमता बढ़ती है।

तुला लग्न वालों के लिए मंगल शुभ फल नहीं देता। द्वितीय व सप्तम का स्वामी होने के कारण यह मारकेश भी होता है। तुला वालों को मंगलवार का व्रत व हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए व बंदरों को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए। मंगलवार को बंदरों को गुड–चना खिला सके तो इससे हनुमान जी प्रसन्न होते हैं व मंगल शांत हो जाता है।

–डिंगे मारना तुला लग्न वालों को बिल्कुल पंसद नहीं होता।

–संतोषी होते हैं जिससे इनमें आलस्य बहुत अधिक रहता है।

–धन के मामले में इनका प्रबंधन बहुत कमजोर होता हैं

–कफ प्रधान होने के कारण ठंडक इन्हें अस्वस्थ कर देती है।

विशेषताऐं

1. डिंगे मारना तुला लग्न वालों को बिल्कुल पंसद नहीं होता।
2. संतोषी होते हैं जिससे इनमें आलस्य बहुत अधिक रहता है।
3. धन के मामले में इनका प्रबंधन बहुत कमजोर होता हैं
4. कफ प्रधान होने के कारण ठंडक इन्हें अस्वस्थ कर देती है।

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262